॥ नारायणबलि: ॥

इस में संकल्प और आहु और सामग्री है ॥॥

पिंडो में दूध घी सहद गंगाजल तिल यह
पिंडे पर गन्ध पुष्प पान इलाची मेवा पान पावने
पैसा धूप लौंग बेती पर चढावनी

प्रतिबंधपरागन्धपुष्प तंदूल नैवेद्य धूप ... तबीअत

दिग्पाल व दिसार दहीं काली उड़द की दाल चावल पैसा फूल बत्ति

1

अथ अब्ददक्षिणा संकल्पः॥ देश
कालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोहं अ
मुकशर्माहं अमुकी वा अमुका मुक
गोत्रस्य पितुरमुक प्रेतस्य देहोद्धु
रणकामः ब्राह्मण द्वारा कारित
स्य श्री ब्रह्म गायत्री मंत्रस्य संपा
दित द्वादश सहस्र जपस्य सांग
तासिद्ध्यर्थं इदं दक्षिणा द्रव्यं
रजतमयं चन्द्र दैवतं यथा यथा
नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभा
ज्य विभज्य दातुमहमुत्सृजे॥
नारायण वलिः कर्म दक्षिणा
संकल्पः॥ देशकालौ संकीर्त्य

त्वा॰ अमुकगोत्रोहं अमुकश
र्माहं ऽपोहं वा॰ अमुकनामकगोत्र
स्य पितुरमुकप्रेतस्य देहोद्धु
रणकामः नारायणबलि
कर्मणः प्रतिष्ठासांगता
सिद्ध्यर्थं इदं रजतं चन्द्र
दैवतं यथानामगोत्राय ब्रा
ह्मणाय ~~[illegible]~~
~~[illegible]~~ दातुमहमुत्सृजे तद
हवनदक्षिणा संकल्पः॥
देशकालौ स्मृत्वा॰ अमुकगो
त्रोहं अमुकशर्माहं ऽपोहं

वाऽमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य
देहोद्धरणकामः त्रालिगाद्वाराकारित
प्रेतोद्धवनं तर्पणं मार्जनं च तदान
प्रतिष्ठासांगपतासिध्यर्थं इदं रजतं
चन्द्रदैवतं यथानाम गोत्राय ब्रा
ह्मणाय प्रोविभागत्वेन दातुमहमुत्सृ
जे॥१॥ दवनकरणेवाले ब्राह्मण
केवरणकासंकल्प॥ देशकालौ संकी
र्त्यामुकगोत्रोहं अमुकशर्माहमु
त्रोहं वाऽमुकगोत्रस्य पितुरमुक
प्रेतस्य अनादिकाद्धियकुक्षिदुर्मरण
जनितपापक्षयपूर्वकदेहोद्धरण
प्राप्तिकामः सद्गतिप्राप्तिकामश्चमी

ज्ञलगायत्रीमंत्रस्य यथासंख्याख्या
जपस्यसपादलक्षसंख्याख्याजपस्यवा
सार्द्धद्विपंचीसहस्त्रसंख्याख्याज
पस्यवासपादैकत्रिंशसहस्त्रसंख्या
ख्याजपस्यतद्दशांशहवनतद्दशांश
तर्पणतद्दशांशभोजनकरणार्थं त्रीणि
डौरिकाद्यातपूजीफलादिभिः अमुक
अमुकगोत्रान् ब्राह्मणान् विभाज
त्वेन अहं वृणे ॥१॥ अथवरसंक
ल्पः ॥ देशकालौ स्मृत्वा अमुकगोत्रो
त्पः हं अमुकशर्माहं वर्माहं गुप्ताहं वा दासो
हं वा अमुकधामुकजो गोत्रस्य पितुरमुक
प्रेतस्य प्रनत्तारिच्चाग्दिपकोष्णिदमेरण

जनित पाप क्षय पूर्वक देहो द्धर
ण प्राप्ति कामः सङ्कल्पितं प्राप्ति काम भव
श्री ब्रह्म गायत्री मंत्रस्य दशांश
हवन अनेन चरु ण प्रक्षालन द्वारा
अहं कार यिष्ये ॥१॥ अथ आरम्भः॥
प्रथम वेदी ११ पश्चिम से पूर्व की तरफ
तक करणी दक्षिण तरफ ॥॥॥॥॥ ईसत
रह से करणी॥ वेदी को छिड़क कर के ३ ती
न तीन कुशा वेदी पर रख देणी अगाडी
११ दुर्वी पा अवने जन की रख देणी फ
र संकल्प ॥ यव त्रि कुशा ले कर
के सव्य होकर के संकल्प करणा
प्रथम प्रतिज्ञा संकल्प करणा फेर
दुर्वी अवने जन को ले कर के संकल्प

करणा॥ अद्यामुक गोत्रस्य पितु
रमुक प्रेतस्य देहोद्धुरण कामः ना
रायण वृत्ति कर्मणी पिंड स्थाने प्र
वनेजने विष्णवे नमः॥ ततो पिंडमा
दाय अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक
प्रेतस्य देहोद्धुरण कामः नारायण
वृत्ति कर्मणी [illegible] एषः पिंडः वि
ष्णवे नमः॥ पुनः प्रत्यवनेजनमु
अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक प्रे
तस्य देहोद्धुरण कामः नारायण व
त्ति कर्मणी पिंडे प्रत्यवनेजने वि
ष्णवे नमः॥ पिंडोपरि प्रत्यवनेजनं
दद्यात्॥ ततः पिंडोपरि गंध पुष्प धूपादि

ल एला फल ताम्बूल मेवा दक्षि
णा धूप दीपानि दद्यात् ॥ततः प्रार्थना
॥इसप्रकार एकादशपिंड देवे ॥१॥

ॐ विष्णवे नमः १
ॐ विश्वरूपाय नमः २
ॐ विष्णवे नमः ३
ॐ यमाय नमः ४
ॐ रुद्रदेवाय नमः ५
ॐ ऐरावसतपे नमः ६
ॐ सर्प्पाऽपत्याय नमः ७
ॐ वायवे नमः ८
ॐ अग्निदेवाय नमः ९
ततोपसव्येन त्रिदशाधि
पाय नमः १०॥ ततः सव्येन

ॐ विष्णवे
नमः ११॥
इसप्रकार
एकादशपिं
ड देकरके
फेर पंचघ
टों के नीचे
पंचवेदी ब
णावणी फेर
प्रवने

जनकी दुन्नी उठाकरके पूर्ववत्
संकल्प करता ॥ प्रथमे अंजली के घ
ट के नीचे की दुन्नी ले करके संकल्प
करना ओं अद्यामुक गोत्रस्य पितु
रमुक प्रेतस्य देहोद्धरणकामः ना
रायण वात्तिकर्मणी अंजलिपिंड स्था
ने अवनेजनं अंजलणे नमः ततः पिं
डमादाय ओं अद्यामुक गोत्रस्य पितुर
मुक प्रेतस्य देहोद्धरणकामः नारायण
ण वात्तिकर्मणि एष पिंडः अंजलणे
नमः ॥ पुनः प्रत्यवनेजनम् ओं अ
द्यामुके गोत्रस्य पितुरमुक प्रेतस्य
देहोद्धरणकामः नारायणवात्ति क

मोरती त्पिंडे प्रत्यवनेजनं प्रक्षालणेन
म: ॥ततः पिंडोपरि गंधपुष्पादिकं द
द्यात ॥इस प्रकार विष्णु का फेर शी
व का फेर यम का पिंड देकर के फेर
अपसव्य होकर तत्पुरुष पिंड दे
णा ॐ अद्यामुक गोत्र पितरमुक
प्रेत तत्पुरुष पिंड स्थाने अवनेजनं ते
मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ ततः पिं
डमादाय ॐ अद्यामुक गोत्र [illegible] पि
तरमुक प्रेत एषः पिंड स्ते मया दीयते त
वोपतिष्ठताम् ॥ पुनः प्रत्यवनेजनं ॥
ततः गंधादिकं दद्यात ॥ इस प्रकार प
ञ्चम पिंड देणा जो स पिंडि से पञ्चा
त् [illegible] जाति के रेतो वहां पर से

मु 6

कल्प ईस तरह से करणा ॐ प्र
द्यामुक गोत्र [illegible] पितुरमुकशर्म
प्रे[illegible]: उपोसथ वा तस्य सुषपिंडस्पा
ने प्रवने जनं तेन मः ॥ ईस तरह से कर
~~[illegible]स्य~~ णा ॥ और कीसी
प्रकृति मे अद्यामुक गोत्रस्य पि
तुरमुक प्रेतस्य देहोद्धरण
कामः पिंडस्पा ने प्रवने जनं
त्रिदशाधिपाय नमः ईसत
रह से ति खा है ॥ प्र तमु
स मच अमुक प्रेत की करणा त्रिदशाधिप
का और प्रेत का सम्बन्ध है य ही पर ॥

साम ग्री नारायण बालि: ॥ प्रथम दिन व रणसामग्री ॥ १ कलश १ नाली घर टूल ४ गिहरा दीपक १ केशर ५ ना ना डो हिका १ टके १२ ॥ अश्वत्थपत्र १ दूवी कुशा पत्ते पुष्प रेता अंवकी टाह हाँ १ मद्धा त यव तिल एक एक छटांक ॥ नैवेद्य वरा १६ आजी हिं काध पाई ॥ कुंकुं हल दी महदी सिंदुर चंदन सपेद की १ जड़ी सर्वौषधी सतावर १ गिहरा सपारी १० केशर के पूर ॥ धूप । की अष्टगंध । ब्राह्मणों के वरण के लोटे जितने ब्राह्मण जप करणे वाले हो उतने ही लोटे ॥ अंगोति धोति ॥ साफे ॥ मखी व नात की ॥ माला आसन पवीत्री पांजने उ मुद्रिका ॥ चंदन गोटि यां सपेद की

...नाम प जपके लोटे ६ लोटे ६ धोति

मलमलसपेद २ गज्रेसप्तकृचविधि की

४ साफे ओमुखी ४ माला ४ ॰आसन
४ पवीत्री ४ जनेऊ ४ मुद्रिका ४ चं
दनगट्टे ४ ॥ घृतदीपक के वास्ते गंगा
जल रूई ॥ पहले प्रथम दिन की सामग्री
शांतिदिन हवन दिन की सामग्री पहले
मूर्ति नग ५ ई सभांत सूवर्ण की १ चां
दी की १ तांबे की १ लोहे की १ सीसे रंग
को १ वस्त्र नग ५ ई सभांत के सुरख
टुल ४ गहरा पीली टुल ४ गिहरा
हरित टुल ४ गहरा का लीट टुल ४ ॰
सपेद खासे काट कडा ४ गहरा का
॰अन्न पूमुंग ॰आध सेर पक्की उड़द
॰आध सेर गिहु ॰आध सेर चावल
॰आध सेर तिल ॰आध सेर पक्के ॥

7

कलश ५ स्त्रीपद्धो हौडियां चपनि
पांसुची केशरो ८ न्याती पर १
कटोरि १ छ पापात्र की डोरि नाते
२ चावलों का प्राय १ सेर पक्का ॥
पान २ जलेवी २ नवग्रहो कीस
मिध नग ६ इस भांत प्रर्क प्राक
की १ पालाश की १ खदिर की १ ऊं
ज की १ उलर की १ जांडी की १ दू
र्वा १ कुश १ अश्वथ पीपल की
प्रादेश मात्र १०८ यह समिध है
३० टू के दुग्ध घृत दधि सहत गं
गाजल के आपते प्रक्ष रता ।। एं
रवक्ष्य व ।। सपादल त्र के जप मे
होरह आ तो लगे है यह क्या ।।

या पानू [illegible]

नामस्ते जायत्रा लक्षणयुक्तम् महं संप०

ततः दान प्रतिष्ठा दातव्या ॥ और जो

दान शय्यादान करणा हो तो वहां कर

देणा ॥ भतिन बोड्या १ मध्यम बोड्या २

उत्तम बोड्या ३ पहलीन बोड्ये करतो

मध्यम और उत्तम बोड्ये पर जो कोई

शय्यादान जो दान करतो वडा महात्म

है ॥ वयो स्वर्ग का बहुत महात्म है ॥

४सर धापधा

३॥सेर पञ्चाग करी

॥३ द्रपव

॥भोजपत्र

३मेवा

।ढ़पप्रष्ठ०

।सहत

।सतावर

३०सपारियां

२५इलाचिवडी

।केश हलदीमहदी

ढ़दिनामीलाई

लाकडीथाकवी

१मणकचीहलनेवा

१